कौशिक और धर्मव्याध

सिन्धू पोर्टर द्वारा पुनर्लिखित

यह कहानी शनिवार ४ जुलाई, २०२० को गुरुपूर्णिमा के सम्मान में आयोजित 'मन्दिर में रहो' सत्संग के दौरान सुनाई गई थी।

महाभारत में, आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले साधकों की अनेक कथाएँ मिलती हैं। ये कथाएँ, सद्गुरु की कृपा से होने वाली आध्यात्मिक जागृति के विस्तार व उसकी विलक्षणता का वर्णन करती हैं।

ऐसी ही एक कथा है, कौशिक नामक एक ब्राह्मण तपस्वी की, जिन्हें अपने अनेक वर्षों के धर्मग्रन्थों के पठन पर अत्यन्त गर्व था। एक दिन जैसे ही कौशिक वेद-पाठ पूर्ण करके उठे, उसी समय एक सारस ने उनके सिर पर विष्ठा कर दी। तब तपस्वी ब्राह्मण ने, इतने क्रोध से भरकर उस असहाय सारस पर दृष्टिपात किया कि वह निष्प्राण होकर धरती पर गिर पड़ा। वर्षों के वेद-पाठ से संचित शक्ति. . .। इसने खुद कौशिक को भी अचम्भित कर दिया!

तपस्या से प्राप्त अपनी शक्ति पर विचार करते हुए कौशिक, नज़दीक ही एक घर के सामने अपना भिक्षा-पात्र लेकर पहुँचे। गृहस्वामिनी अपने परिवार की सेवा में व्यस्त थी, अपना कार्य समाप्त कर आख़िरकार वह बाहर आई और पूछा कि उन माननीय अतिथि के भोजन हेतु वह क्या लाए। यह सुनते ही कौशिक क्रोध से भड़क उठे और चिल्लाकर बोले, "तुमने मुझे इतनी देर प्रतीक्षा कराने का दुस्साहस कैसे किया?"

उस महिला के उत्तर में सत्य की गूँज थी। उसने पूछा, "आप इतने क्रोधित क्यों हैं? क्रोध विद्वान व्यक्ति का शत्रु है! देखिए, मैं उस सारस की तरह नहीं हूँ जिसे आपने कुछ ही देर पहले अपनी लापरवाही से मार दिया!" इन अप्रत्याशित शब्दों को सुनकर कौशिक स्तब्ध रह गए। उस सारस की बात इस महिला को कैसे पता चली?

उस स्त्री ने उनकी आँखों में एक गहन दृष्टि डाली और कहा, "अपने क्रोध पर नियन्त्रण पाने के लिए आपको मिथिला जाकर ऋषि धर्मव्याध से मार्गदर्शन लेना चाहिए। उनकी प्राप्ति से आपको अवश्य ही कुछ-न-कुछ सीखने को मिलेगा।"

उस स्त्री द्वारा प्रदान किए गए प्रज्ञान द्वारा वे तपस्वी ब्राह्मण सीधे मिथिला की वैभवशाली नगरी में जा पहुँचे—और सीधे उस द्वार पर . . . जो एक स्थानीय कसाई का घर था। कौशिक ने इधर-उधर चारों ओर अपनी नज़रें दौड़ाईं और पुनः अपने सामने स्थित द्वार की ओर देखने लगे। क्या वे सही जगह पर हैं? क्या *सचमुच* यही वह स्थान है जहाँ एक महान व पूजनीय ऋषि निवास करते हैं?

और तभी, कसाई सीधे उनकी ओर आए और कहने लगे, "क्या आपकी यात्रा सुखद रही? आपको मेरे पास भेजने से पहले उस नेक स्त्री ने आपको जो भोजन दिया, वह बहुत अच्छा था न?"

कौशिक का मुँह खुला का खुला रह गया। उन्होंने अपना सिर झुका लिया। यह सच था! यह व्यक्ति—यह कसाई—ही सर्वज्ञ धर्मव्याध थे!

उस रात धर्मव्याध ने कौशिक से जो कहा, उसने कौशिक को हमेशा के लिए रूपान्तरित कर दिया। धर्मव्याध ने कहा, "हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! पवित्र आचरण सभी सत्पुरुषों का लक्षण है। जिनमें सरलता व विनम्रता होती है, जो धैर्यवान तथा अभिमानरहित होते हैं, जो परोपकारी होते हैं और क्रोध नहीं करते, वे ही सच्चे सद्गुणों से युक्त होते हैं।"

अपने श्रीगुरु से सिखावनियाँ व कृपा प्राप्त कर, और अन्ततः यह समझ प्राप्त कर लेने के बाद कि सच्चा ज्ञान व सच्ची समझ क्या है, कौशिक का हृदय स्वच्छ व ग्रहणशील हो गया था। वे अपने श्रीगुरु धर्मव्याध का ज्ञान रूपी प्रकाश लेकर घर लौटे और खुले हृदय से वेद-शास्त्रों को प्रामाणिकता से पढ़ाते हुए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित कर दिया।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।